IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# "शिक्षक–अभिभावक सम्बंध मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण"

अरूण दत्त
शोध छात्र
शिक्षा संकाय
जे0वी0जैन कॉलेज,
सहारनपुर

डा0 शुभ्रा चतुर्वेदी
(एसो0प्रोफेसर)
शिक्षा संकाय
जे0वी0जैन कॉलेज,
सहारनपुर

(Abstract) सार

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक स्तर शिक्षक–अभिभावक सम्बंध के मापन हेतु मापनी के निर्माण एवं मानकीकरण का विवरण प्रस्तुत करता है। एक सुसंरचित मापनी शिक्षक अभिभावक सम्बंध को एक प्रत्यपक्षण के रूप में लिया गया है। जिसमें मापनी अभिभावकों पर प्रशासित करने के लिए सहारनपुर जनपद में स्थित प्राथमिक विधालयों में अध्ययनरत विधार्थियों के 50 अभिभावकों का यदाच्छिक तरीके से न्यादर्श किया गया। प्रारूप से मापनी की संरचना शिक्षक–अभिभावको सम्बंध के 6 पक्षों, (1) शिक्षक–अभिभावक सम्बंध पक्ष, (2) माता पिता की भागीदारी का अवसर पक्ष, (3) जनक प्रभावकारित पक्ष (4) बच्चे की सफलता की माता पक्ष (5) छात्र गृह कार्य पक्ष (6) माता पिता की भागीदारी का समय पक्ष से सम्बंधित 50 कथनों द्वारा की गई। टी परीक्षण का प्रयोग करते हुए मापनी का मानकीकरण किया गया और 33 कथन अन्तिम रूप से मापनी में शामिल किये गए। मापनी की विश्वसनीयता और वैधता उच्च स्तर की ज्ञात हुई है। यह मापनी प्राथमिक स्तर शिक्षक– अभिभावक सम्बन्ध प्रत्यक्षण को मापने हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

Key-words . प्राथमिक स्तर, शिक्षक–अभिभावक सम्बन्ध।

**प्रस्तावना:–**

मानव विकास के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। बिना शिक्षा के मानव का विकास सम्भव नही हैं। मनुष्य जन्म से लेकर अन्तिम अवस्था तक कुछ न कुछ सीखता है। यही ज्ञान उसके विकास या उन्नयन में सहायक होता है। शिक्षा को स्तर के अनुरूप कई भागो मे बाटा गया है। जिसमे सबसे पहला स्तर प्रारम्भिक शिक्षा को माना गया है। जिसमे बालक के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है क्योकि प्रा0 शिक्षा की गुणवत्ता सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करती है। किसी भी समाज में शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करने वाले तीन मुख्य घटक है। छात्र, शिक्षक एवं अभिभावक। अभिभावक एक बहुत महत्वपूर्ण घटक है जो न केवल नामांकन एवं ठहराव के लक्ष्य की प्राप्ति में उपयोगी भूमिका का निर्वहन कर सकता है। वरन शिक्षा की गुणात्मकता में भी योगदान दे सकता है। विद्यालय के उत्तरदायित्व में सामाजिक उत्थान को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। विद्यालय एवं समाज का संबंध एक दूसरे के हित के लिए है। समाज विद्यालय कमी स्थापना करता है। विद्यालय समाज का एक अविभाज्य अंग है। आज की शिक्षा कल निर्माण होने वाले समाज का बीज होता है। कल के समाज की पेशगी आज की शिक्षा द्वारा प्राप्त होती है। विद्यालय शिक्षा का केन्द्र है। अभिभावक, शिक्षक और परिवेश तीनों के ही सुसम्पर्क

से बालक का जीवन बनता है। विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर जहाँ छात्र–शिक्षक संबंध का प्रभाव विधार्थियों के सर्वांगीण विकास पर होता है उसी प्रकार अभिभावक शिक्षक का संबंध भी जितना अधिक सुदृद्ध होगा। विधार्थियों के उपलब्धि पर उसका असर पडना निश्चित माना गया है।

प्रस्तुत लधु शोध में शिक्षक–अभिभावक सम्बन्ध का तात्पर्य एक प्रत्याक्षण (दृष्टिकोण/मत) के रूप में लिया गया है। जिसमें कि शिक्षक एवं अभिभावक एक–दूसरे से सूचनाओं का आदान प्रदान करते हैं। व संवाद बयांकर विधार्थियों के शैक्षिक अवरोधों को दूर करते हैं।

यूनेस्को के अनुसार – माता–पिता अपने बच्चो के पहले शिक्षक होते हैं।''उसका सहयोग बच्चे की पढ़ाई और विकास को प्रभावित करता है।

एक सफल अभिभावक के सहयोग के लिए, आपको शिक्षको के साथ निरन्तर बातचीत करने की आवश्यकता पड़ती है। बच्चो के विकास के लिए शिक्षक–अभिभावकों का यह एक साक्षर लक्ष्य होता है। जिसको प्राप्त करने के लिए एक दिशा में कार्यरत रहते हैं।

**समस्या कथन**

**''शिक्षक–अभिभावक सम्बंध मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण''**

**उद्देश्य** – अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य एक शोध उपकरण का निर्माण करना है जिसके द्वारा प्राथमिक स्तर पर शिक्षक– अभिभावक सम्बंध का मापन किया जा सके।

**शोध अध्ययन का सीमांकन एवं परिभाषिकरण** – शोधकर्ता ने समय एवं धन व संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन को परिभाषित व सीमांकित किया है।

**परिभाषिकरण एवं सीमांकन** –

**शिक्षक–अभिभावक सम्बन्ध**– प्रस्तुत शोध में शिक्षक–अभिभावक सम्बन्ध का तात्पर्य एक प्रत्यक्षण (दृष्टिकोण/मत) से है जिसको अभिभावक द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। उसी आधार पर शिक्षक अभिभावक सम्बन्ध का परीक्षण सीमांकित है।

प्रस्तुत शोध सहारनपुर जनपद के 10 विधालयों में अध्ययनरत विधार्थियों के 100 अभिभावकों पर प्रशासित एवं उनको उनकी अभिव्यक्ति पर आधारित है।

**शोध विधि**– प्रस्तुत लघु शोध कार्य शोधकर्ता द्वारा सर्वे विधि का प्रयोग किया जायेगा।

**आंकड़ें संग्रहण के उपकरण** –

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन सहारनपुर जनपद के 10 विधालयों में अध्ययनरत विधार्थियों के 100 अभिभावकों पर प्रशासित एवं उनको उनकी अभिव्यक्ति पर आधारित है। अभिभावकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

**न्यादर्श** – वर्तमान लघु शोध में अध्ययनरत विधार्थियों के 100 अभिभावकों को शामिल किया गया।

**शोध चर व उपकरण** –

प्रास्तावित शोध मे प्रायुक्त चरो के मापन हेतु निम्नलिखित उपकरणो का उपयोग करके आंकडे एकत्रित किये गये है। **शिक्षक–अभिभावक सम्बंध मापनी**

**आंकडो का एकत्रीकरण–**

प्रास्तावित शोध उपकरणो का विधिवत प्रशासन करके आकडे एकत्र किये गये है। आकडे व्यक्तिगत सम्पर्क करके एकत्र किए गये है शोध उपकरणो में वर्णित निर्देशो व सावधानियों का ध्यान मे रखकर शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है।

**विषय वस्तु विश्लेषण** –

शोध उपकरण निर्माण के क्रम में सर्वप्रथम शोध निर्देशक डा0 शुभ्रा चतुर्वेदी एवं अन्य विशेषज्ञों के द्वारा परीक्षण को संशोधित किया गया। विशेषज्ञों के द्वारा सम्बंधित क्षेत्र की प्रासंगिकता, कठिनाई, स्तर, भाषा, शुद्धता एवं स्पष्टता को ध्यान में रखते हुए परीक्षण का विश्लेषण किया गया। विशेषज्ञों द्वारा विश्लेषण करते हुए पदो की प्रासंगिकता निर्णीत की गई। कथनों की सावधानीपूर्ण संवीक्षा के बाद विशेषज्ञो की 95ः प्रतिशत सहमति के आधार पर शिक्षक अभिभावक सम्बंध प्रत्यक्षण मापनी के प्रा0 प्रारूप में शामिल करने क लिए छः क्षेत्रों (1) शिक्षक–अभिभावक सम्बंध पक्ष, (2) माता–पिता की भागीदारी का अवसर पक्ष, (3) जनक प्रभावकारिता पक्ष (4) बच्चे की सफलता की माता पक्ष (5) छात्र गृह कार्य पक्ष (6) माता पिता की भागीदारी से सम्बंधित 50पदों का चयन किया गया। मापनी का निर्माण पॉच प्वाईन्ट रेटिंग स्केल पर किया गया कथन (1) पूर्णतया असहमत (2) असहमत (3) निरपेक्ष (4) सहमत (5) पूर्णतया सहमत की अभिव्यक्ति दर्शाता है।

**प्रा0 जॉच स्तर** – परीक्षण की प्रा0 जॉच के लिए इसके प्रा0 प्रारूप को सहारनपुर जनपद के 10 प्राथमिक विधालयों से यदाच्छिक रूप से 100 अभिभावकों पर प्रशासित किया गया। उत्तरदाताओं को दिये गये कथनों मे अपने अभिव्यक्ति को (✓) लगाने को कहा गया। इस प्रकार इस छोटे समूह पर परीक्षण को प्रशासित कर अनावश्यक शब्दो, अवांछित सूचनाओं, दोहरी नकारात्मकता, भ्रम, गलत अर्थ आदि को दूर किया।

**अंकन** – न्यादर्श की समस्त 100 इकाइयो के लिए व्यक्तिगत प्राप्तांक ज्ञात किये गये अंकन की प्रक्रिया में कथन (1) पूर्णतया असहमत के लिए 1 अंक (2) असहमत के लिए 2 अंक (3) निरपेक्ष के लिए 3 अंक (4) सहमत के लिए 4 अंक (5) पूर्णतया सहमत के लिए 5 अंक निर्धारित किया गया। इस प्रकार प्रत्येक कथन के लिए अधिकतम प्राप्तांक 5 तथा न्यूनतम प्राप्तांक 1 हो सकता है।

**पद विश्लेषण** – पद विश्लेषण किसी परीक्षण के प्रमापीकरण का महत्वपूर्ण सोपान है। पद विश्लेषण के आधार पर प्रश्नों का चयन अथवा प्रश्नो को स्वीकार/अस्वीकार किया जाता है। प्रश्नपत्रों को प्राप्तांको के आधार पर उच्चनतम से न्यूनतम की ओर अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया गया। ऊपर से 27ः प्रयोज्यो को उच्च समूह में तथा नीचे 27ः प्रयोज्यो को निम्न समूह में रखा गया। इन दोनों समूहों को पदो के चयन हेतु पद विश्लेषण के उद्देश्य से सांख्यिकीय व्यवहार हेतु चुना गया सभी 50 पदो हेतु टी–मूल्य की गणना की गई 2.58 या 2.58 से अधिक एवं (0.1 स्तर पर सार्थक) टी–मूल्य वाले पदो को स्वीकार किया गया तथा 2.58 से कम टी–मूल्य वाले पदो को

अस्वीकृत कर दिया गया। अंत में 50 कथनो में से 33 कथनो का शिक्षक अभिभावक सम्बंध प्रत्यक्षण मापनी के अन्तिम प्रारूप हेतु चयन किया गया।

सारणी

पदो के पद चयन हेतु टी–परीक्षण

| क्रमांक | T–मूल्य | Status |
|---|---|---|
| 1. | 6.602 | स्वीकृत |
| 2. | 4.423 | स्वीकृत |
| 3. | 5.571 | स्वीकृत |
| 4. | 2.374 | अस्वीकृत |
| 5. | 6.783 | स्वीकृत |
| 6. | 1.967 | अस्वीकृत |
| 7. | 5.928 | स्वीकृत |
| 8. | 5.845 | स्वीकृत |
| 9. | 5.109 | स्वीकृत |
| 10. | 4.423 | स्वीकृत |
| 11. | 4.156 | स्वीकृत |
| 12. | 1.409 | अस्वीकृत |
| 13. | 6.281 | स्वीकृत |
| 14. | 6.723 | स्वीकृत |
| 15. | 3.469 | स्वीकृत |
| 16. | 2.326 | अस्वीकृत |
| 17. | 4.966 | स्वीकृत |
| 18. | 5.278 | स्वीकृत |
| 19. | 1.479 | अस्वीकृत |
| 20. | 7.327 | स्वीकृत |
| 21. | 5.953 | स्वीकृत |
| 22. | 4.816 | स्वीकृत |
| 23. | 2.000 | अस्वीकृत |
| 24. | 4.364 | स्वीकृत |
| 25. | 5.469 | स्वीकृत |
| 26. | 5.707 | स्वीकृत |
| 27. | 5.876 | स्वीकृत |
| 28. | 1.521 | अस्वीकृत |
| 29. | 1.818 | अस्वीकृत |
| 30. | 1.909 | अस्वीकृत |
| 31. | 7.780 | अस्वीकृत |
| 32. | 1.607 | स्वीकृत |
| 33. | 6.602 | अस्वीकृत |
| 34. | 1.841 | अस्वीकृत |
| 35. | 2.467 | स्वीकृत |
| 36. | 7.406 | स्वीकृत |
| 37. | 5.295 | अस्वीकृत |
| 38. | 2.294 | अस्वीकृत |
| 39. | 4.910 | स्वीकृत |
| 40. | 1.940 | अस्वीकृत |
| 41. | 3.580 | स्वीकृत |
| 42. | 3.472 | स्वीकृत |
| 43. | 1.821 | अस्वीकृत |
| 44. | 5.204 | स्वीकृत |
| 45. | 7.550 | स्वीकृत |
| 46. | 1.909 | अस्वीकृत |
| 47. | 5.469 | स्वीकृत |
| 48. | 1.909 | अस्वीकृत |
| 49. | 3.184 | स्वीकृत |
| 50. | 6.825 | स्वीकृत |

**विश्वसनीयताः–**

परीक्षण की विश्वसनीयता से अभिप्राय भिन्न–भिन्न अवसरो पर या समतुल्य पदो के भिन्न–2 विन्यासो पर किसी व्यक्ति के द्वारा प्राप्त अंको की संगति से है। परीक्षण की विश्वसनीयता के निर्धारण हेतु विच्छेदन विधि तथा परीक्षण पुन–परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया। दोनो विधियों से सहसम्बंध गुणांग क्रमशः .88 तथा .98 प्राप्त हुए जो परीक्षण की उच्च विश्वसनीयता के सूचक है।

**वैधता** – किसी मापन उपकरण की वैधता, का तात्पर्य उस यथार्थता पर निर्भर करती है जिससे उस तथ्य को मापता है जिसके लिए उसका मापन किया गया है। परीक्षण की वैधता का निर्धारण विशेषज्ञो के निर्णयो के आधार पर किया गया। विशेषज्ञो द्वारा उपकरण की विषयगत वैधता, का निर्धारण विशेषज्ञो के निर्णयो के आधार पर किया गया। विशेषज्ञो द्वारा उपकरण की विषयगत वैधता, रूप वैधता तथा अन्य वैधता निर्धारण की गई। परीक्षण की मानदण्डा वैधता .75प्राप्त हुई अतः ज्ञात हुआ की परीक्षण पर्याप्त मानदण्ड वैधता रखता है।

**अन्तिम प्रारूप** – अतः ये 50 पदो में से 17 पद अस्वीकृत कर दिये गये और 33 पदो का शिक्षक अभिभावक सम्बंध प्रत्यक्षण मापनी हेतु चयन किया गया।

**निष्कर्ष** – मापनी प्राथमिक स्तर पर शिक्षक अभिभावक सम्बन्ध प्रत्यक्षण को मापने हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –**


पाठक, पी.डी. (1974): शैक्षिक निबंध, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

राय,पी.एस. (2002): अनुसंधान परिचय, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

सरीन एवं सरीन(2008): शैक्षिक अनुसंधान विधियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

गैरेट एच.ई.,(2005): स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन, पैरागॉन इण्टरनैशनल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

गुप्ता,एस0पी0, : मानसिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद